www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छात्र वर्ग में नशे की दुष्प्रवृत्तियाँ

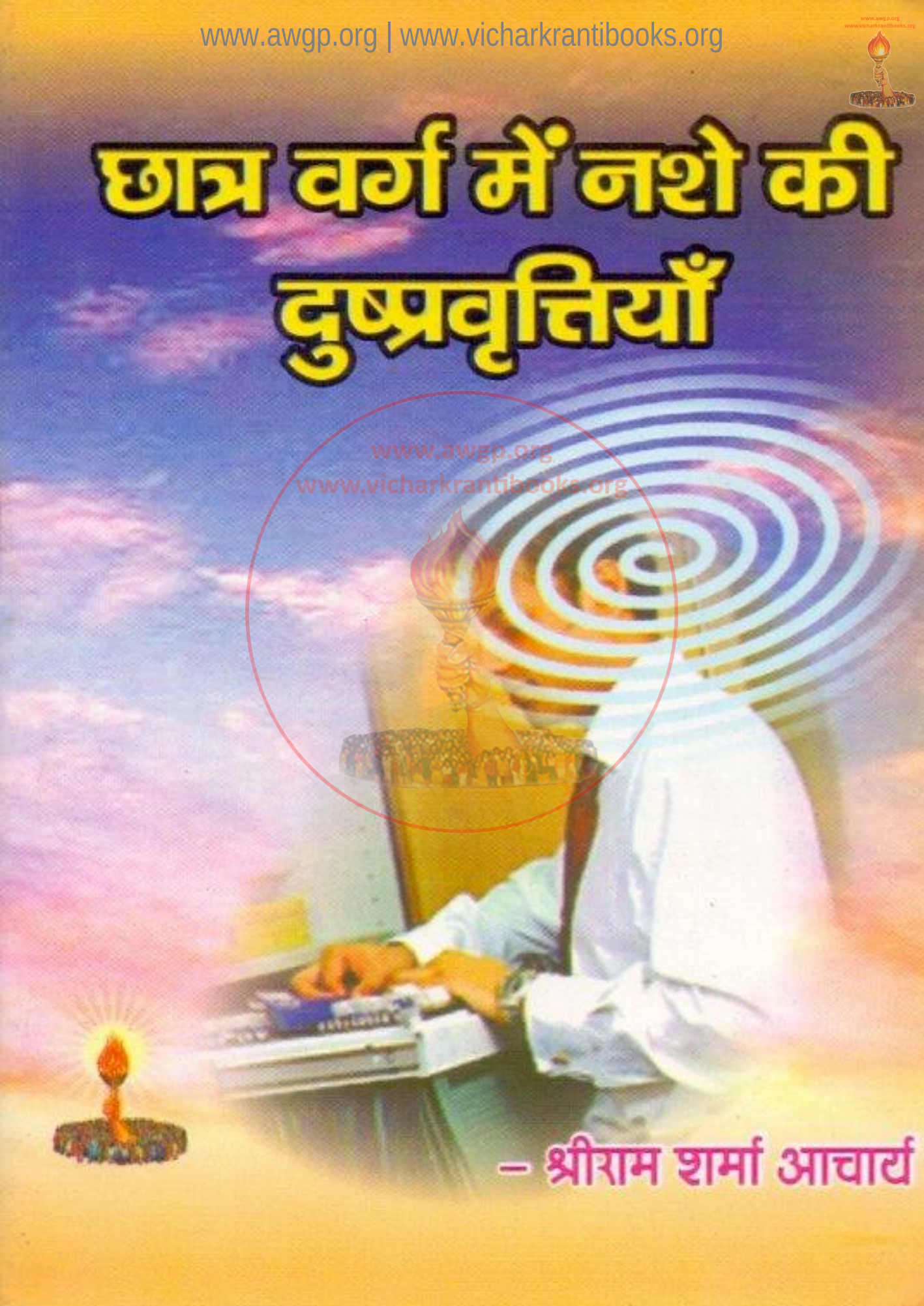

– श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

छात्र वर्ग में नशे की दुष्प्रवृत्तियां

नशा सभी के लिए बुरा है । उसका दुष्प्रभाव सभी जानते हैं । यहां तक कि उसके शिकंजे में फंसे हुए भुक्तभोगी भी, जिनने वह दुर्व्यसन किसी प्रकार अपना तो लिया है पर अब छुड़ाए छूटता नहीं । उसकी तलब भूत पलीत की तरह सवार होती है और तब चैन लेने देती है, जब अपनी पूजा करा लेती है ।

नशेबाज स्वयं भी अनुभव करते हैं और उनके हितैषी, संबंधी भी समझते हैं कि इस कुटेब से शरीर खोखला होता है, बुद्धि का स्तर पागलों जैसा बनता है, पैसे की भी बर्बादी होती है । परिवार में कलह मचता है, बच्चों का भविष्य बिगड़ता है और परिचित, अपरिचितों में बदनामी फैलती है, कोई

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्वास नहीं करता और ओछा आदमी समझकर समय पड़ने पर साथ नहीं देता ।

लाभ इतना ही है कि पीते समय खुमारी जैसी मस्ती चढ़ती है । अधपगला बना देती है । किसी काम का नहीं रहने देती और जब वह उतरती है तो शरीर को लुटा पिटा, हारा थका, बीमार कमजोर जैसा बनाकर छोड़ जाती है । इस कुचक्र में आदमी अपनी जीवनी शक्ति गंवा बैठता है । मस्तिष्क का तीखापन चला जाता है बीमारियां घेरे रहती हैं । संपर्क क्षेत्र की भर्त्सना और भीतर की आत्म प्रताड़ना अपराधी जैसा व्यक्तित्व बना देती है । पैसा पास में न रहने पर घर में या बाहर चोरी–उठाईगीरी करनी पड़ती है । स्पष्ट है कि नशेबाज पूरी आयु नहीं भोग पाते । उन्हें

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आधा अधूरा जीवन जीकर ही बिस्तर समेटना पड़ता है ।

समझदारों में से हर एक को नशेबाजी के दोष बखानते और उस कुटेब से लोगों को छुड़ाने का प्रयत्न करते पाया जाएगा । ऐसे अर्ध विक्षिप्तों से देश और समाज के सामने समस्याऐं ही उत्पन्न होती हैं । उससे सार्वजनिक हानि ही होती है । ऐसे समाज और देश असमर्थ–अव्यवस्थित ही रहते हैं, जिनमें नशेबाजों की संख्या बढ़ी चढ़ी होती है ।

इस संदर्भ में नई व्याधि कोढ़ में खाज की तरह और जुड़ गई है कि स्कूल–कॉलेजों के नवयुवक चुपके चुपके इस कुटेब को अपनाने लगे हैं । साधारण नशेबाजों की हरकतें तो प्रकाश में आती रहती हैं, पर इन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किशोरों का संबंध परिवार समाज से भी घनिष्ठ नहीं रहता । वे स्कूल के बाद भी खेलने–पढ़ने के बहाने घर से बाहर रहते हैं और उस समय में कुसंग में पड़कर इस कुटेब को पालते, अपनाते रहते हैं । पढ़ाई, जेबखर्च, ट्यूशन आदि के बहाने घर वालों से पैसा भी प्राप्त कर लेते हैं । जब इस प्रकार काम नहीं चलता, तो दूसरे अपराध स्तर के काम सीखने और करने लगते हैं ।

सर्वेक्षणों से पता चला है कि यह व्याधि स्कूलों की बड़ी कक्षाओं में विशेषतया कालेजों में विशेष रूप से फैलने लगी है, नशे भी ऐसे चले हैं जिन्हें दवा की गोली की तरह मुंह में डाल लेने से उसका शराब, चरस जैसा प्रदर्शन भी नहीं होता ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नशेबाजी की मूर्खता अत्यधिक विनाशकारी

मूर्खता अवास्तविकता के वातावरण में जिया करती है । उसे यथार्थता से डर लगता है, क्योंकि वह न केवल दूरदर्शिता की मांग करती है, वरन् यह भी चाहती है कि व्यक्ति में तथ्य को समझने, स्वीकार करने और धारण करने की क्षमता भी हो ।

मनुष्य स्वभाव में बड़प्पन और सुविधा संपादन की जन्मजात ललक है । उसे पूरा करने के लिए समझदारी भी चाहिए और पुरुषार्थ परायणता भी । यह न हो तो संपदाएं कहां से मिलें ? उपभोग के साधन कैसे जुटें । प्रगति के लिए अनुकूलता देने वाली परिस्थितियां कैसे हाथ लगें ? इतने पर भी व्यक्ति राजमार्ग पर चलने और पगडण्डी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तलाशने का प्रयास करता है । उसमें उसे उलझन और असफलता का ही सामना करना पड़ता है ।

इसी अवास्तविकता को अपनाने के लिए आतुर मनुष्य ऐसा अवलंबन पकड़ लेता है, जो तात्कालिक भ्रम उत्पन्न करके ऐसा ढांढ़स बंधाता है कि वह जो चाहता है, सहज ही सस्ते मोल में पाया जा सकता है । नशेबाजी इसी विडंबना का नाम है, उसे अपनाकर कल्पना लोक की रंगीन उड़ानें उड़ना आरंभ हो जाता है और समझा जाता है कि मानो किला जीत लिया, मोर्चा मार लिया ।

नशे में अधिक चीजें आती हैं । तंबाकू, गांजा, अफीम, शराब से लेकर हैरोइन, एल. एस. डी. तक के अनेकों भेद उपभेद हैं,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिनके अपने अपने प्रभाव और स्वाद हैं । इन सबकी न्यूनाधिक मात्रा में एक ही प्रतिक्रिया होती है कि सेवनकर्ता अपने आप को तत्काल बलिष्ठ अनुभव करता है । कुछ फुर्ती सी भी प्रतीत होती है और दिमाग जमीन से उड़कर आसमान छूने लगता है । इस स्थिति में कई रंगीले सपने आते हैं और कई ऐसे अनुभव होते हैं, जिनसे प्रतीत होता है कि वह अधिक बुद्धिमान और अधिक बलवान हो गया । ऐसा अवलंबन हाथ आ गया, जिसके सहारे कल्पना को यथार्थता की अनुभूति में पलक झपकते ढाला जा सकता है ।

नशा पीते ही चुस्ती फुर्ती और मस्ती आती है, पर वह नितांत क्षणिक और अवास्तविक होती है । उसके सहारे कोई ठोस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कार्य नहीं किया जा सकता और न उस दिशा में बढ़ा जा सकता है, जिसे अपनाने पर अभीष्ट उपलब्धियां प्राप्त हो सकती हैं । सपना तो सपना ठहरा । वह यदि यथार्थता में परिणति हो सका होता, तो उतने भर से लोग न जाने कहां से कहां पहुंचे होते ?

नशा एक प्रकार का उबाल उत्पन्न करता है, जिससे छोटी वस्तु बड़ी के रूप में विकसित हुई प्रतीत होती है । दूध उबलने पर वह पतीली की तली में से उछलकर ऊपर की सतह तक आ जाता है । इतना ही नहीं कई बार तो वह बर्तन में समाता तक नहीं और बाहर निकलकर फैलने, चूल्हे में गिरने तक लगता है । मोटी बुद्धि चकित होती है कि उबाल लाने की कला कितनी विलक्षण है,

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिससे तनिक–सा दूध क्षण भर में इतना बढ़ गया । उसके विस्तार ने कई गुनी अधिक वृद्धि कर ली । नशेबाज भी प्रायः ऐसा ही अनुभव करता है । स्नायुतंतु उत्तेजित हो उठते हैं । क्रोधी आवेशग्रस्त उन्मादी की तरह जमीन पर बांस फटकारने और गाली गलौज के साथ कई प्रकार की अंटशंट चुनौतियां देने लगते हैं । पिनक चढ़ने पर यही स्थिति छा जाती है । खुमारी में अवास्तविकता का पूरी तरह साम्राज्य छा जाता है । उस उन्माद का पहला लक्षण है, शरीर में शक्ति बढ़ने की अनुभूति, इसके साथ ही मस्तिष्क की दशा भी विचित्र हो जाती है । कल्पनाएं ऐसी लगने लगती हैं, मानो वे वास्तविकता बनकर फलित हुई हों । जो चाहा गया था, वह मिल गया हो ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर यह होता अवास्तविक ही है । घोड़े पर सड़ासड़ चाबुक चलाकर उसके दुर्बल और थके होने पर भी कुछ समय के लिए बेतहाशा भी दौड़ाया जा सकता है । देखने वाले अचंभा कर सकते हैं कि चाबुक में कैसी जादुई शक्ति है, जिसके सहारे दुर्बल घोड़ा सरपट दौड़ने लगा, पर यह स्थिति देर तक नहीं रहती । रही सही सामर्थ्य चुक जाने पर घोड़ा पछाड़ खाकर गिर पड़ता है । तब वह या तो प्राण छोड़ता है या फिर उसे उठाने के लिए किन्हीं दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है । दूध के उफान का भी यही हाल होता है । चूल्हे की तेज आग से उसका बहुत सा अंश भाप बनकर उड़ जाता है । बहुत सा उसकी दीवारों पर चिपक जाता है । कुछ बाहर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निकलकर बर्बाद हो जाता है । तेज उबाल हुआ तो बेकाबू हुआ अंश चूल्हे में भी जा गिरता है और उबाल लाने वाली आग को बुझा देता है । उसमें दरारें डाल देता है । जब आवेश शांत होता है, तब परिणाम सामने आता है और प्रतीत होता है कि बर्तन में जितना दूध डाला गया था, उसका बड़ा अंश बर्बाद हो गया । दुर्बल घोड़े को दौड़ाकर चमत्कार उत्पन्न करने वाले भी या तो टट्टू से हाथ धो बैठते हैं या फिर उसे मुद्दतों तक विश्राम और खुराक देकर पिछली साधारण स्थिति तक पहुंचने की प्रतीक्षा करते हैं ।

नशे की खुमारी एक प्रकार का उन्माद है, जिसमें सफलतासूचक दिवा स्वप्न आने लगते हैं । लगता है मनोवांछा पूरी होने की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिति आ गई, पर यह पिनक देर तक नहीं टिकती । रंगीले सपने खुमारी हल्की होते ही उड़ंछू हो जाते हैं । पहले से भी गई बीती स्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव होता है ।

नशेबाज निरर्थक सपने गढ़ने के बदले भारी कीमत चुकाते हैं । उनका शरीर गलता जाता है । जीवनी शक्ति का भंडार चुकता जाता है और साधारण रोगों का सामना करने की भी क्षमता नहीं रहती । बीमार पड़ते हैं, तो इलाज कारगर नहीं होते और मुद्दतों कष्ट सहन करते हैं । बीमारी लंबी पड़ जाए तो समझना चाहिए कि अब बिस्तर से उठकर मरघट में ही लेटने को स्थान मिलेगा ।

खुमारी का मस्तिष्क पर असाधारण दबाव पड़ता है, वह मूढ़ता और जड़ता

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पकड़ने लगता है । स्वभाव में अप्रमाणिकता भर जाती है । आचरण बेतुके, बेढंगे होने लगते हैं । ऐसी दशा में कोई विश्वासपात्र नहीं रह सकता है । उपेक्षित, तिरष्कृत व्यक्ति दूसरों के सहयोग से वंचित होता जाता है । उसका गला नीरसता और उपेक्षा ही दबोचती रहती है ।

नशेबाजी का घातक दौर

नशीले पदार्थों में से किसी में भी ऐसी विशेषता नहीं है कि सेवनकर्ता के लिए किसी भी दृष्टि से लाभप्रद या आनन्ददायक सिद्ध होता हो । दूसरों की देखा देखी उठती उम्र में कई इसे एक शौक समझकर अपना लेते हैं पर जब वह आदत बन जाता है तो छोड़े नहीं छूटता ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नशे क्षणिक उत्तेजना प्रदान करते हैं । वैसे ही जैसे थके घोड़े पर हंटर बरसाने से उसकी चाल तेज होती दीखती है । हंटर में अपनी कोई शक्ति नही । उसके आघात से जो छटपटाहट होती है उसी आवेश को नशे का प्रभाव समझ सकते हैं । यह एक प्रकार का आवेश है, जो गहरा होने पर उन्माद की स्थिति तक पहुंच जाता है । सिगरेट, चाय जैसे हलके नशे तो चाबुक की तरह अपने देह में थोड़ी उत्तेजना देते रहते हैं पर शराब जैसी अधिक नशीली चीज उन्माद पैदा करती है । सेवनकर्ता की विचार शक्ति को लड़खड़ा देती है और वह ऐसा आचरण करने लगता है जिसे असामाजिक एवं अनुचित की संज्ञा दी जा सके । नशे की अधिक मात्रा के लिए ललक उठती रहती है । उसकी अभ्यस्त मात्रा कम पड़ने लगती है । उतने से

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

तो आदत भर की पूर्ति होती है । उत्तेजना प्राप्त करने के लिए अधिक मात्रा, अधिक बार लेने की इच्छा उमंगती है ।

नशे शरीर को सुखाते और बुद्धि को गड़बड़ाते हैं । इस बेकार मद में इतना धन खर्च हो जाता है जिससे परिवार के आवश्यक काम रुक सकते हैं । प्रगति के लिए साधन प्राप्त करने की स्थिति नहीं रहती । जिस तिस से बहाने बनाकर कर्ज लेना पड़ता है । उसे चुकाने के लिए सुविधा नहीं बन पड़ती । निर्धनता और ऋणग्रस्तता दोनों ही ऐसी हैं जो मनुष्य का सम्मान गिराती हैं । उसे अप्रमाणिक और अविश्वस्त समझा जाता है । फलतः सहयोग और सम्मान प्राप्त करने के स्त्रोत अवरुद्ध हो जाते हैं ।

नशेबाज अपनी मौत जल्दी बुला लेते

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैं । बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं । जीवनी शक्ति का सार भाग इस कुटेब द्वारा चूस लिया जाता है फलतः उसे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में पिछड़ा हुआ समझा जाता है । व्यक्तित्व को इतना दुर्दशाग्रस्त बना लेने पर कोई भी व्यक्ति श्रद्धा सम्मान का पात्र नहीं रह जाता । जो जिस सीमा तक नशेबाजी की कुटेब से ग्रस्त है वह उतना ही अपनी तथा दूसरों की नजर में गिरता जाता है । शिक्षा, संपन्नता और पद प्रतिष्ठा होते हुए भी व्यक्ति नशेबाजी के कारण हर किसी की आंखों में गिर जाता है ।

दुर्भाग्य इस बात का है कि नशेबाजी की बुराइयां अब पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी समझी जाने लगी हैं । सिगरेट पर छपा रहता है कि इसका सेवन हानिकारक है फिर भी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोग न तो उस तथ्य को गंभीरतापूर्वक समझने का प्रयत्न करते हैं और न उस लगी हुई लत को छोड़ते ही हैं ।

पिछली शताब्दियों में लोंगों के शरीर अपेक्षाकृत अधिक जीवनी शक्ति संपन्न थे । इसलिए वे दबाव को आसानी से सह जाते थे । चिलम तमाखू हुक्का पीते हुए भी किसी प्रकार गाड़ी खींचते जाते थे और बीमार नहीं पड़ते थे । किंतु अब लोगों ने अपने शरीर खोखले बना लिए हैं । उनमें इतनी क्षमता नहीं रही कि इन विषों को पचा सकें । उनकी प्रतिक्रिया कुछ ही समय दीख पड़ती है और प्रतीत होता है कि मनुष्य जर्जर, दीन हीन हो चला । कहने को अपना समय शिक्षितों और समझदारों की बहुलता का माना जाता है पर जब यह दीख पड़ता है कि छोटों की अपेक्षा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बड़ों में यह कुटेब अधिक मात्रा में अधिक तेजी से फैल रही है तब प्रतीत होता है कि हम प्रगति की ऊंचाई में उठने की अपेक्षा अवनति के गर्त में गिरते चले जा रहे हैं ।

पुराने नशों में भांग, गांजा, चरस, अफीम आदि का ही प्रचलन था । सो भी बड़े लोगों में, वयोवृद्धों में । पर अब तो इनके स्थान पर अत्यंत मंहगे और अत्यंत हानिकारक नशों की भरमार है । शराब का जमाना भी अब पीछे रह गया । वह मजदूर वर्ग के लिए निर्धन आदिवासियों तक ही अपने शिकंजे सीमित किए हुए है । बड़े कहलाने वाले बड़प्पन की डींग हांकने वाले उन नशों का प्रयोग करते हैं, जो अत्यंत मंहगे और असाधारण रूप से हानिकारक हैं । हैरोइन, स्मैक, कैक, चरस आदि इसी श्रेणी के नशे हैं । उनका खुलेआम

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बिकने का तो रिवाज नहीं है पर तस्करों से इसका व्यवसाय करोड़ों अरबों रुपयों का होता है । बनाने वाले, बेचने वाले इधर से उधर ले जाने वाले इस धंधे में इतनी कमाई करते हैं कि कुछ ही दिनों में प्रचुर धन कमा लेते हैं और गरीब से अमीर बन जाते हैं ।

पिछले दिनों अमीर बूढ़े ही यह व्यसन पालते थे । अफीम या शराब को अपनी संपन्नता दिखाने और मस्ती अनुभव करने के लिए नशों को अपनाते थे । जो मरने के नजदीक पहुंच चुके उन्हें कुछ और जल्दी मर जाने में कोई विशेष हर्ज नहीं पड़ता । पर अब की बार ऐसा हुआ है कि यह विष बेल नीचे से ऊपर को चढ़ रही है । कालेजों के छात्र छात्राएं इन नव आविष्कृत नशों के आदी हो रहे हैं । सर्वेक्षणों से पता चला है कि यह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुटेब लगभग चालीस प्रतिशत से भी अधिक छात्रों को अपनी चपेट में ले चुकी है ।

यह नशे ऐसे हैं कि कुछ ही दिनों में अपने शिकार को पूरी तरह चूस लेते हैं और फिर कुछ ही वर्षों में उसे मौत के मुंह में घसीट ले जाते हैं । इनकी आदत ऐसी हो जाती है कि इन नशों को सेवन किए बिना वे नहीं रह सकते । कहते हैं उनके अंग अवयव टूटने लगते हैं, ऐंठन होती है और ऐसा लगता है कि प्राण गया । तब उन्हें पैसा जुटाने और उन वस्तुओं को खरीदने के लिए अपराधों के क्षेत्र में प्रवेश करना पड़ता है ।

पूर्वजों की कमाई को चोरी छिपे समाप्त करने में देर नहीं लगती क्योंकि इनका मूल्य इतना अधिक है कि एक एक खुराक बीस से लेकर पचास रुपए तक की पड़ती है । छात्र

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

छात्राएं पढ़ाई खर्च के अतिरिक्त इतना धन घर से किस बहाने प्राप्त करें । अंत यह होता है कि दिमाग साथ न देने से पढ़ाई भी छूट जाती है और उतना धन जुटाने के लिए ऐसे काम करने पड़ते हैं जो उनका स्तर और भविष्य ही खराब कर देते हैं । एक प्रकार से समझा जाना चाहिए कि उनकी जिन्दगी ही बर्बाद हुई ।

यह कुटेब छात्रों तक ही सीमित नहीं है । शौकीनी और फैशन का मनचलापन जिस प्रकार अनेक प्रकार के अपव्यय कराता और दुर्व्यसन लगाता है, उसी प्रकार यह भी देखा गया है कि संपन्न और शिक्षित वर्ग के लोग उसी प्रकार इस कुटेब के शिकार होते जाते हैं जिस प्रकार कि अनगढ़ लोग गांजा, चरस, देशी शराब आदि के आदी होते हैं । इस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दलदल में फंस जाने के उपरांत उनका व्यक्तित्व प्रतिभा रहित हो जाता है ओर जीवित होते हुए भी मृतक स्तर का जीवन घसीटना पड़ता है ।

नशेबाजी का यह दुर्व्यसन था तो पहले भी चिंताजनक, पर अब उसमें जो नए तत्व मिले हैं उसने तो इस व्यसन को विष तुल्य बना दिया है । इनके विरुद्ध संघर्ष अब और भी तीव्र होना चाहिए । न केवल विरोध अपितु आदती नशेबाजों के लिए कोई ऐसे समाधान औषधि, परामर्श, मनश्चिकित्सा के रूप में खोजे जाएं जो इन्हें इन अंधी गलियों से मुक्ति दिला सके ।

घातक नशेबाजी से सावधान

कुछ समय पहले तक नशा अमीरों का शुगल था । बड़े आदमी उसे अपनी मौज

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मस्ती के लिए पीते थे । राजस्थान के सामंत, जागीरदारों में अफीम चलती थी और वनवासी स्तर के पिछड़े वर्ग ताड़ी, ठर्रा आदि पीकर अपने खाली समय को काटते थे । अंग्रेजों को दावत देने वाले रईस व्यापारी उसके साथ बढ़िया शराब भी भेंट करते थे । जमींदारों की चौपालों पर चिलम हुक्का गरम रहता था । सर्व साधारण में यह लत कम ही थी । भांग और गांजा पीने वाले लोग हजारों, लाखों में से कोई एक निकलता था । साधू बाबा गांजा, चरस पीकर अपना ठाली समय मौज मस्ती में गुजारते थे और उनके पास सट्टा पूछने जाने वालों को आग्रहपूर्वक वह आदत लगाते थे ताकि जब वे आवें तब साथ में भेंट स्वरूप गांजा, भांग भी लेते आएं ।

किंतु इन चार दशकों में उनकी वृद्धि

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

असाधारण रूप से हुई है । बीड़ी और चाय का प्रचलन कुछ पहले धीरे धीरे हुआ । बाद में तो यह शुगल आंधी, तूफान की तरह बढ़ा और कुहासे की तरह इस कदर छाया कि रास्ता दीखना तक बंद हो गया ।

इन दिनों अफीम स्तर की हैरोइनें विभिन्न नाम रूप से बिक रही हैं और उनकी लत लोगों को संक्रामक बीमारियों की तरह लग रही है । एक की देखा देखी दूसरा सीखता है, दूसरे से तीसरा, चौथा, पांचवां । इसी प्रकार बेल आगे आगे बढ़ती जाती है और लगता है कि वह अमरबेल की तरह समूचे समाज वृक्ष को चूसकर रहेगी । सबसे बड़े दुख और आश्चर्य की बात यह है कि इस कुटेब ने नवयुवकों और नवयुवतियों को अपने शिकंजे में बुरी तरह कसना आरंभ कर दिया

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है और वे इस सत्यानाशी सर्वभक्षी दुर्व्यसन के सम्मुख अपनी जीवनी शक्ति को समाप्त करते चले जा रहे हैं ।

यह लत कालेजों में बुरी तरह फल फूल रही है । छोटे स्कूलों के बच्चों में तो इतनी समझ नहीं होती और घर से अधिक पैसा भी हाथ नहीं लगता । पर जो कालेजों में पढ़ते हैं उनमें से अधिकांश संपन्न घरों के होते हैं । फिर कालेज के चित्र विचित्र खर्चों में कुछ और बढ़ोत्तरी करके घर वालों से अधिक पैसा दुह लेना उनके लिए कठिन नहीं पड़ता । मां से अलग, बाप से अलग मिल जाता है । समीपवर्ती रिश्तेदारों से भी जिस तिस बहाने उधार के रूप में प्राप्त कर लेते हैं और नशेबाजी के मंहगे व्यसन के लिए पैसे का जुगाड़ किसी न किसी रूप में जुटा ही लेते हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कालेजों में प्रचलित इस दुर्व्यसन के विस्तृत आंकड़े जो सामने आए हैं वे बहुत ही डरावने हैं । कलकत्ता विश्वविद्यालय के सौ के पीछे अड़तालीस और दिल्ली विश्वविद्यालय के ३३ प्रतिशत छात्र इस दुर्व्यसन के शिकार पाए गए हैं । इंजीनियरिंग शिक्षण संस्थाओं में तो यह संख्या और भी अधिक है । वहां वह पचास प्रतिशत छात्रों पर सवारी गांठ चुकी है । इनमें लड़के ही नहीं लड़कियां भी शामिल हैं । लगता है कालेज क्षेत्र में यह देश व्यापी दुर्व्यसन डेढ़ करोड़ से अधिक युवकों को अपने जाल में अब तब कसने ही वाला है ।

स्पष्ट है कि ऊंचे दर्जे के नशों की आदत सेवनकर्ता के मस्तिष्क और स्वभाव को ऐसा वशवर्ती बना लेती है कि उनका उससे छूटना

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कठिन ही नहीं असंभव जैसा होता है । दिन दिन सामर्थ्य और कुशलता घटती जाती है । पौरुष और उत्साह को भारी आघात पहुंचता है । आदी मनुष्य एक प्रकार से निकम्मा और विक्षिप्त स्तर का बनकर रहता है । उससे अपने हाथ के नीचे के काम संभलते नहीं । अस्त व्यस्तता और गड़बड़ी की मात्रा बढ़ते जाने से अंततः वे सभी काम छिन जाते हैं । भले ही अपने हों या पराए । हर काम सूक्ष्म बुद्धि और तन्मयता चाहता है । इसके बिना वह सही स्तर का हो ही नहीं सकता है । समझा जाता है कि अस्त व्यस्त काम की अपेक्षा उसे न कराया जाना अच्छा । नशेबाज का स्वभाव और व्यक्तित्व ऐसा बनता जाता है जिससे घृणा बरतें और उसकी संगति से बचने बचाने का प्रयत्न करें । इन

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

परिस्थितियों में भविष्य का अंधकारमय होना निश्चित है ।

यह छूत का रोग देश, देशांतरों की सीमाएं लांघता हुआ विश्वव्यापी बनता जा रहा है । नई पीढ़ी पर किसी भी देश का भविष्य निर्भर रहता है । जिस देश में इस वर्ग के बहुसंख्यक लोग दुर्व्यसनों के शिकार हैं, उसकी प्रगति संदिग्ध है । इस प्रकार के दुर्दशाग्रस्त समुदाय का भविष्य अंधकारमय ही समझा जा सकता है । जिनकी प्रतिभा बर्बाद हो गई उन्हें अर्धमृत या अर्ध विक्षिप्त स्तर का निकम्मा ही कहा जा सकता है ।

हैरोइनों की किस्में अमेरिका में अपने देश की अपेक्षा कुछ पहले ही पहुंच चुकी हैं । धनियों पर दुर्व्यसनों का आक्रमण पहले होने की बात में कुछ आश्चर्य की बात भी नहीं है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वह देश समय रहते चौकन्ना हो गया और रोकथाम के लिए कड़े कानून बनाए । वहां इस स्तर के नशों का व्यापार करने वालों के विरुद्ध बने कानून में जेल जुर्माने के अतिरिक्त यह प्रावधान भी है कि उनकी सारी संपत्ति जब्त कर ली जाए । इतना ही नहीं उनके मुकद्दमों की पैरवी करने वालों की फीस जब्त करने तक की व्यवस्था है । इतने पर भी देशों में लुक छिपकर यह विनाश क्रम चलता ही रहता है । अंकुश एक सीमा तक ही कारगर हुआ है ।

अपने देश में इन वस्तुओं की तस्करी करने वालों की पकड़ धकड़ और लाखों के माल की जब्ती के समाचार मिलते रहते हैं । इससे प्रतीत होता है कि जो पकड़ में नहीं आता वह व्यवसाय कितना बड़ा होना चाहिए

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और उसके सेवन से कितने लोगों की प्रतिभा, तंदुरुस्ती, समझदारी तथा दक्षता नष्ट होनी चाहिए । यह घाटा इतना बड़ा है जिसे दुर्भिक्षों एवं दुर्घटनाओं, दैवी प्रकोप के कारण होने वाले विनाश की तुलना में कम नहीं अधिक ही भयंकर समझा जा सकता है । अपनी ही युवा पीढ़ी को बर्बादी के गर्त में धकेलने वाले मौत के पागलपन के सौदागर अब अबोध बच्चों को भी अपने घेरे में लेने की कोशिश कर रहे हैं ।

बीड़ी, सिगरेट, पान, तंबाकू बेचने वाले तक इन वस्तुओं को अपने यहां रखने लगे हैं और ग्राहक का इशारा पाते ही तत्काल इन वस्तुओं को प्रस्तुत कर देते हैं । यहां तक कि चुस्की की बर्फ तक में मिश्रण मांगने वालों की जरूरत पूरी करता रहता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह बढ़ता हुआ दुर्व्यसन किस प्रकार रुके, इस संदर्भ में मूर्धन्य लोगों को रोकथाम के कारगर उपाय सोचने चाहिए । मात्र कानून बना देने या दंड का अनुपात बढ़ा देने से काम नहीं चलेगा वरन् इसकी घेराबंदी चारों ओर से होनी चाहिए । स्कूलों, कालेजों में निरंतर डाक्टरी जांच होती रहे और जो ऐसी लतों के शिकार पाए जाएं उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया जाए । सरकारी नौकरी में जो इस अनर्थ में फंसे पाए जाएं उनकी नौकरी छुड़ा ली जाए और सामान्य नागरिक जो धुत पाए जाएं उन्हें अविश्वस्त घोषित करके किसी महत्वपूर्ण लेनदेन या उत्तरदायित्व सौंपने पर प्रतिबंध लगा दिया जाए । इस प्रकार की कड़ाई से सेवनकर्ताओं के होश ठिकाने आएंगे और वे

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवित रहने के लिए इस कुटेब से बचने की कोशिश करेंगे ।

नशों की उपलब्धि सर्वसुलभ न रहने दी जाए, खुले बाजार में बिकने वाले मादक द्रव्यों के मूल्य बढ़ा दिए जाएं और लुक छिपकर कानून तोड़ने वालों के लिए संपत्ति जब्ती जैसा प्रावधान हो । इससे अधिक आवश्यक है कि इन्हें बनाने के काम आने वाली वस्तुओं का उत्पादन ही अवरुद्ध कर दिया जाए । शराब, अफीम, भांग, गांजा, चरस जैसी वस्तुएं जो भी उत्पादन करे वह भी विक्रेताओं और सेवनकर्ताओं की तरह अपराधी माना जाए ।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ.प्र.)

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

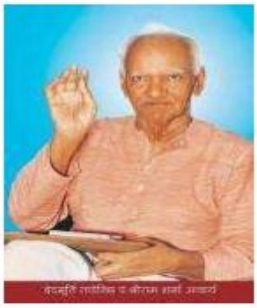

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org